Deg I (Hons)
P-I (Hist)

सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण

महमूद का अन्तिम और इतिहास प्रसिद्ध आक्रमण सोमनाथ के मन्दिर पर हुआ। सोमनाथ का शिव मन्दिर काठियावाड़ के समुन्द्र तट पर अपनी विशालता एवं भव्यता में अद्वितीय माना जाता था। सोमनाथ मन्दिर एक पत्थर के ऊपर था और हजारों तरह के हीरे-जवाहरातों से शिव लिंग का छत्र बना हुआ था। चन्द्रग्रहण के अवसर पर लाखों यात्री सोमनाथ के शिव मन्दिर का दर्शन करने आते थे और दान देते थे। मन्दिर के भूगर्भ में अगाध सम्पति एकत्रित थी। एक हजार पुजारी मन्दिर में प्रतिदिन पूजा-पाठ का काम करते थे और 500 सुन्दरियाँ नाच-गान के लिए नियुक्त थी। मन्दिरों के पुजारियों ने यह अफवाह फैला रखी थी कि सोमनाथ जी को महमूद नष्ट नहीं कर सकता है। ब्राह्मणों के अहंकार को समाप्त करने के लिए महमूद गजनवी ने 17 अक्टूबर 1024 ई० को गजनी से प्रस्थान किया।

महमूद गजनवी ने एक विशाल सेना संगठित कर सोमनाथ पर आक्रमण किया था। महमूद मुल्तान के रास्ते से काठियावाड़ पहुँचा और मार्ग के बाधाओं को पार करते हुए 1025 ई० में ~~आन्हिलवा~~ अन्हिलवाड़ा पहुँचा। हिन्दुओं के

P.T.O.

के बीच सोमनाथ के प्रति अटूट आस्था थी और वे महमूद से युद्ध कर विजय पाने की आशा रखते थे। परन्तु महमूद आक्रमण में सफल हुआ और लगभग 50,000 व्यक्तियों को मौत के घाट उतार कर मन्दिर में प्रवेश किया। सोमनाथ की मूर्ति तोड़कर उसके टुकड़े को गजनी मक्का और मदीना भेज दिया गया। सोमनाथ के मन्दिर की लूट से महमूद को 20,00,000 दीनार से अधिक की सम्पत्ति मिली।

डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार – "सोमनाथ की विजय ने महमूद की कीर्ति को और भी दीप्त कर दिया।"

सिन्ध के जाटों पर महमूद का अन्तिम आक्रमण 1027 ई० में हुआ। 1400 नावों का एक जलबेड़ा तैयार कर जाटों के विरुद्ध आक्रमण किया। युद्ध में जाट पराजित हुए। जाटों की सम्पत्ति लूट ली गई और बच्चों तथा स्त्रियों को गुलाम बना लिया गया।

महमूद ने भारत पर अनेक बार आक्रमण किया। वह सदियों से संचित सम्पत्ति को लूटने में सफल रहा और सिन्ध, मुल्तान, अफगानिस्तान तथा पंजाब में गजनी वंश का राज्य स्थापित कर उसने नई कीर्ति हासिल की। भय से भारतीय शासक एक-एक कर महमूद के सामने घुटने टेकते गये और महमूद उन्हें रौंद कर मूर्ति भेदक की ख्याति प्राप्त कर ली।

महमूद गजनवी की मृत्यु 1030 ई० में हुई।